देश भर में विकल्प संगमों का प्रस्ताव

पर्यावरणीय ध्वंस, समुदायों का विस्थापन, आजीविकाओं का नाश और बढ़ती आर्थिक-सामाजिक असमानताएं 'विकास' और 'वैश्वीकरण' के मौजूदा मॉडल की बहुत गंभीर खासियतें हैं। भारत के विभिन्न भाग पहले ही बहुत गहरे तनावों और टकरावों से जूझ रहे हैं। आर्थिक विकास की अंधाधुंध दौड़ के चलते बहुत सारे इलाके एक अकल्पनीय तबाही के दहाने पर पहुंच चुके हैं। चाहे शिक्षा हो, अनुसंधान और विकास हों, बाजार और व्यापर हों, या स्वास्थ्य क्षेत्र हो, अर्थव्यवस्था और समाज के तमाम औपचारिक क्षेत्रों को इसी चाह को पूरा करने की दिशा में मोड़ा जा रहा है।

मगर इसी अंधेरे दौर में ऐसे विकल्पों की तलाश और व्यवहार के लिए नाना चेष्टाएं भी की जा रही हैं जो न केवल 'विकास' की प्रभुत्वशाली सोच को चुनौती दे सकते हैं बल्कि इंसानी खुशहाली के पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ और सामाजिक-आर्थिक रूप से समतापरक वैकल्पिक रास्ते भी मुहैया करा सकती हैं। इनमें टिकाऊ खेती/चरवाही/मछुवाही/वानिकी, लोकतांत्रिक बाजारों व श्रमिकों द्वारा नियंत्रित उत्पादन पद्धतियों का विकास, सामुदायिक शिक्षा व स्वास्थ्य पद्धतियों, अंतर्सांस्कृतिक शांति प्रयासों, वर्ग, जाति, धर्म, नस्ल व स्त्री-पुरुष समानता को पुख्ता करने वाले प्रयासों, शहरी टिकाऊपन और समावेशी ग्रामीण विकास के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इन कोशिशों को एक ऐसे सहभागी (या मूलभूत) लोकतंत्र और राजनीतिक प्रक्रियाओं के जरिए सींचने की कोशिश की जा रही है जो निर्णयकारी मंचों पर सभी नागरिकों को (केवल 'प्रतिनिधियों' को ही नहीं) समान पहुंच प्रदान करने का आश्वासन देती हैं और पारदर्शिता व उत्तरदायित्व जैसे बुनियादी अभिशासन सिद्धांतों को साकार कर सकती हैं।

इन प्रयासों से पता चलता है कि स्थानीय स्तर पर तथा ज्यादा व्यापक क्षेत्र के स्तर पर व्यावहारिक विकल्प निश्चित रूप से संभव हैं। लेकिन, कई कारणों से ये प्रयास सीमित रहे हैं :

1. इनमें से ज्यादातर प्रयासों के बारे में दस्तावेजीकरण और जागरूकता की कोशिशें बहुत कम रही हैं;
2. इनमें से ज्यादातर कोशिशें बिखरी हुई और एक दूसरे से अलग-थलग, प्रायः बहुत छोटी कोशिशें हैं;
3. उनको एक वैकल्पिक समाज के समग्र ढांचे या दृष्टि में पिरोने के प्रयास सीमित रहे हैं।

फलस्वरूप, ये वैकल्पिक प्रयास अभी भी प्रभुत्वशाली सोच को बदलने या उसे एक उल्लेखनीय चुनौती पेश करने के लिए एक 'निर्णयक बल' अख्तियार नहीं कर पाए हैं।

यहां हमने विकल्प शब्द को केवल सरलता के मकसद से इस्तेमाल किया है। मगर, हम भली-भांति समझते हैं कि इस अवधारणा की पूरी पेचीदगी को किसी एक शब्द के सहारे पूरी सटीकता और समग्रता से पेश नहीं किया जा सकता। हम समझते हैं कि ऐसे बहुत सारे प्रयास प्रभुत्वशाली समझ को चुनौती देने या उसका एक विकल्प पेश करने की चाह से प्रेरित नहीं रहे हैं बल्कि वे खास बुनियादी उसूलों से पैदा हुए हैं। इनमें से बहुत सारे विचार, अवधारणाएं और जीने के ढंग संभवतः बहुत सालों से अस्तित्व में रहे होंगे हालांकि इनमें से कुछ नए भी हैं।

विकल्प संगमों का विचार

इसी पृष्ठभूमि में इन विकल्पों को साकार कर रहे लोगों के क्षेत्रीय समागम या सम्मेलन आयोजित करने के बारे में सोचा जा रहा है। संभवतः बाद में इन समागमों को राष्ट्रीय स्तरों पर भी आयोजित किया जा सकता है। इन आयोजनों को हम विकल्प संगम कहना चाहते हैं क्योंकि यहां इन प्रयासों से जुड़े लोगों को परस्पर रचनात्मक चुनौती देने, एक-दूसरे से सीखने, नई साझेदारियां और गठजोड़ बनाने और मिल-जुलकर वैकल्पिक भविष्यों की रचना करने का मंच मुहैया कराया जा सकता है।

हम भली-भांति समझते हैं कि ऐसे बहुत सारे नेटवर्क और प्रयास हैं जो इस मुद्दे से संबंधित विभिन्न आंदोलनों और समूहों को विभिन्न मंचों पर एक-दूसरे के निकट लाने का प्रयास करते रहे हैं। मगर इनमें से ज्यादातर अलग-अलग

विषयों या अलग-अलग किस्म के आंदोलनों तक सीमित रहे हैं। मसलन विनाशकारी 'विकास' परियोजनाओं के खिलाफ चल रहे संघर्ष, वैकल्पिक स्वास्थ्य संबंधी प्रयास, टिकाऊ खेती संबंधी प्रयास आदि। यानी, इन प्रयासों के लिए आपस में मेल-जोल और लेन-देन के अवसर सीमित हैं और ऐसी चेष्टाएं कम की गई हैं जब अलग-अलग सवालों पर सक्रिय प्रयासों - पारिस्थितिकीय, शिक्षा संबंधी, स्वास्थ्य, न्याय संबंधी, बाजार/व्यापार, अभिशासन और अन्य सभी विकल्पों - को एक-दूसरे के साथ लाया जा सके और वे एक-दूसरे से सीख सकें। हम प्रस्तावित आयोजनों को इसी तरह के सामूहिक मंचों के रूप में देखते हैं जहां मौजूदा प्रयासों को सिर्फ दोहराने की बजाय उनको और आगे बढ़ाने के रास्ते निकाले जा सकते हैं।

हमारा प्रस्ताव है कि विकल्प संगमों में मौजूदा आर्थिक/राजनीतिक/सामाजिक व्यवस्थाओं की खामियों पर कम से कम वक्त खर्च किया जाए। इसके लिए पहले ही हमारे पास कई मौके मौजूद हैं। इन आयोजनों का मुख्य जोर विकल्पों पर ही रहेगा। दूसरी तरफ, हम इन विकल्पों के महिमामंडन के जाल में भी फंसना नहीं चाहते। लिहाजा, इन मौकों पर ऐसे प्रयासों की खूबियों और खामियों, दोनों पर बात की जाएगी।

विकल्प संगमों की संरचना

विकल्प संगम अकादमिक सम्मेलन नहीं होंगे। ये वैकल्पिक प्रयासों में लगे लोगों के दिलो-जहन के बीच खुले लेन-देन के अवसर होंगे। यहां अलग-अलग विषयों पर केंद्रित छोटे-छोटे सत्रों का आयोजन किया जाएगा ताकि संबंधित लोगों को गहन आदान-प्रदान और सीखने-सिखाने के मौके मिलें। कम से कम आधा वक्त अलग-अलग विषयों और आंदोलन से सीखने-सिखाने के लिए मुहैया कराया जाएगा। विभिन्न प्रयासों को सामने लाने के लिए प्रदर्शनी, फिल्म/एवी, थियेटर और अन्य कला एवं जनसंचार माध्यमों का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल किया जाएगा। कुल मिलाकर इन संगमों में मौज-मनोरंजन, सीखने-सिखाने और मेलजोल बढ़ाने के अवसरों का एक समृद्ध मिश्रण होगा।

सहभागी और आयोजन स्थल

हमें उम्मीद है कि इन संगमों में विनाशकारी और असमतापरक विकास के विकल्प के लिए काम कर रहे कार्यकर्ताओं, चिंतकों, शोधकर्ताओं और सिद्धांतकारों (जो परस्पर अलग-अलग श्रेणियां नहीं हैं) को साथ आने का मौका मिलेगा। स्थानीय स्थितियों के आधार पर इन आयोजनों में कुछ दर्जन से कुछ सौ लोगों की सहभागिता हो सकती है।

प्रत्येक संगम के आयोजन का जिम्मा किसी क्षेत्रीय संगठन/संस्थान को उठाना होगा। आयोजन के खर्चे इस संगठन तथा अन्य सह-आयोजकों व सहभागियों द्वारा मिलकर वहन किए जाएंगे। ऐसा नहीं लगता कि कोई भी संगठन ऐसे किसी आयोजन का पूरा खर्चा अकेले उठा सकता है इसलिए उसकी लागतों को ज्यादा से ज्यादा लोगों और संगठनों में बांटने की कोशिश की जाएगी।

संगमों के नियोजन में समन्वय के लिए फिलहाल एक शुरुआती समन्वय समिति का गठन किया गया है जिसके सदस्य हैं: कल्पवृक्ष, डेकन डेवलेपमेंट सोसायटी, भूमि कॉलेज, शिक्षांतर, टिम्बक्टू कलेक्टिव, डेवलेपमेंट ऑलटर्नेटिव्ज़, सोपेकॉम, जीन कैम्पेन, भाषा, कृति टीम, सेंटर फॉर इक्विटी स्टडीज़, उर्मूल, जनांदोलनों का राष्ट्रीय समन्वय, पीपुल्स साइंस इंस्टीट्यूट, माटी, आशा, एकता परिशद, सादेद, नोलेज इन सिविल सोसायटी, नेसफास, अकोरड, सेंटर फॉर एड्यकेशन एनड कोमयुनिकेशन, पर्यावरण शिक्षण केन्द्, रिसटोर, ComMutiny: The Youth Collective, ATREE, Ektha, SECMOL, SLC-IT, LAMO, Local Futures, Samvedana, Video Volunteers, Ideosync, Greenpeace India, धरामित्, मकाम, सहजीवन व Dinesh Abrol, सुषमा अय्यंगर । हमें उम्मीद है कि जैसे-जैसे यह कारवां आगे बढ़ेगा, बहुत सारे अन्य साथी और संस्थाएं भी इसमें शामिल होते जाएंगे।

अगर आपकी भी इसमें दिलचस्पी है तो...

हमसे संपर्क करें : अशीष कोठारी, chikikothari@gmail.com; सुजाता पदमनाभन, sujikahalwa@gmail.com